संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 112 वाँ पुष्प

बदलते शैक्षिक परिदृश्य में मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य

प्रधान सम्पादक
प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
(कुलपति)

सम्पादक
प्रो. रमेश प्रसाद पाठक
प्रो. के. भरतभूषण
प्रो. रचना वर्मा मोहन

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली-110016

प्रकाशक
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानि कक्षेत्र
नई दिल्ली-110016

आई.एस.बी.एन : 81-87987-09-8

प्रकाशन वर्ष - 2021

© श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

मूल्यम् : ₹ 500/-

मुद्रक
अमर प्रिंटिंग प्रैस
8/25 विजयनगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 8802451208

11. सुस्थित जीवन शैली : आयाम
एवं युक्तियाँ —डॉ. अमिता पाण्डेय भारद्वाज 67

12. सुस्थित जीवन शैली हेतु पर्यावरण
अभिज्ञान का महत्त्व —डॉ. शिवदत्त आर्य 76

13. सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मानसिक
स्वास्थ्य का वैदिक
विश्लेषण —डॉ. देवेन्द्र प्रसाद मिश्र 81

14. शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य
ज्योतिष शास्त्रीय
परिप्रेक्ष्य में —डॉ. विनोद कुमार शर्मा 90

15. शारीरिक एवं मानसिक
स्वास्थ्य में योग शिक्षा —डॉ. अरविन्द कुमार 110

16. मानसिक एवं शारीरिक
स्वास्थ्य में योग शिक्षा —डॉ. रवि शंकर शुक्ल 116

17. आधुनिक जीवन शैली :
समस्या एवं समाधान —डॉ. कुलदीप कुमार 120

18. विद्यार्थियों के शारीरिक
एवं मानसिक विकास में
शिक्षण संस्थाओं की भूमिका :
प्रयास एवं चुनौतियां —डॉ. अग्निवेश गुप्ता 129

19. मानसिक एवं शारीरिक
स्वास्थ्य में पौरोहित्य शिक्षा—डॉ. रामराज उपाध्याय 134

20. ज्योतिषशास्त्रानुसार भारतीय
चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में मानसिक
एवं शारीरिक स्वास्थ्य —डॉ. परमानन्द भारद्वाज 142

सुस्थित जीवन शैली हेतु पर्यावरण अभिज्ञान का महत्त्व

–डॉ. शिवदत्त आर्य
अतिथि व्याख्यात, शिक्षाशास्त्र विभाग

वर्तमान में मनुष्य का जीवन तीव्र गति से बदलने हुए समय एवं पर्यावरण के कारण अस्थिर हो गया है। जिसके कारण उसके समक्ष अनेकानेक प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न हो गई है, जिसका निराकरण उसे स्वप्रयास एवं सामूहिक प्रयास से करना है। सभी मनुष्य यह चाहते है कि हमारा जीवन कष्टरहित हो तथा वेदोक्ति –'जीवेत् शरदः शतम्, शृणुयाम शरदः शतम्, पश्याम शरदः शतम्' के अनुसार सौ वर्ष तक भलीभांति जीवनयापन करें। परन्तु 21वीं सदी की आर्थिकोन्मुखी विकास पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न कर दी हैं। इन्हीं समस्याओं से यदि मनुष्य मुक्ति पाकर जीवन व्यतीत करता है। तो उसका जीवन सुस्थित जीवन शैली की श्रेणी के अन्तर्गत आता है। सुस्थित जीवन शैली से तात्पर्य मुख्यतया यह है कि व्यक्ति अपना जीवन संतुलित एवं संयमित रूप से व्यतीत करने में समक्ष हो सके। मानव अपना प्रत्येक कार्य पर्यावरण के अन्तर्गत रहकर ही पूर्ण करता है। अतः व्यक्ति को पर्यावरण सम्बन्धी सामान्य जानकारी यदि है तो वह अपने जीवन का व्यस्थापन सुचारू रूप से कर सकता है तथा पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे सकता है। अतः सुस्थित जीवन शैली में पर्यावरण अभिज्ञान का बहुत अधिक

संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 114 पुष्प

अध्यापक शिक्षा के संवर्धन में कौशल विकास : प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ

शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित संगोष्ठी-कार्यवृत्त

(Seminar Proceeding)

28-29 मार्च, 2017

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरली मनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सदन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

1. डॉ. सुरेन्द्र महतो
2. डॉ. प्रेमसिंह सिकरवार
3. डॉ. शिवदत्त आर्य
4. डॉ. जितेन्द्र कुमार

शोध-प्रकाशन-विभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

नवदेहली-110016

प्रकाशक:

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीन:

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-91-X

मूल्यम् : ₹ 325.00

मुद्रक:

डी.बी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

7. संस्कृत साहित्य एवं नेतृत्व कौशल 46
—डॉ. सुरेन्द्र महतो

8. नेतृत्व शैली हेतु कौशल विकास 53
—डॉ. शिवदत्त आर्य

9. अध्यापक शिक्षा में कौशल विकास के लिए शिक्षा नीतियों की भूमिका 58
—डॉ. प्रेमसिंह सिकरवार

10. अध्यापक शिक्षा में कौशल विकास 69
—डॉ. विचारी लाल मीणा

11. अध्यापन में सम्प्रेषण-कौशल का महत्त्व 83
—डॉ. प्रदीप कुमार झा

12. अध्यापक शिक्षा के संवर्धन में कौशल विकास : प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ 86
—श्रीमती रेखा चौधरी

13. शिक्षण शास्त्र में कौशल विकास 94
—नवीन आर्य

14. सम्प्रेषण कौशल विकास-विधियाँ एवं व्यूह रचनाएँ 101
—विजय कुमार झा

15. सम्प्रेषण कौशल विकास : भाषा-शिक्षण में उपयोगी 108
—कालीशंकर मिश्र

16. शिक्षणशास्त्र में कौशल विकास 114
—प्रभाकर

17. शिक्षणशास्त्र में कौशल विकास 127
—सन्तोष कुमार काण्डपाल

18. सम्प्रेषण कौशल विकास तथा व्यूह रचनाएँ 138
—देवेश शर्मा

नेतृत्व शैली हेतु कौशल विकास

–डॉ. शिवदत्त आर्य

सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली

भूमिका

प्रत्येक राष्ट्र, समाज और संगठन को प्रभावी नेतृत्व की आवश्यकता होती है। कुशल नेतृत्व जहाँ इन्हें नई दिशा देकर प्रगति व उपलब्धियों की ऊँचाई पर ले जाता है, वहीं अकुशल नेतृत्व इनके पराभव व पतन के लिए उत्तरदायी होता है। कुशल नेतृत्व में छोटे राष्ट्र भी संसार में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लेते हैं। यही कारण है कि समाज के विकास के साथ–साथ ही नेतृत्व के बारे में भी विचार किया जाता है। प्रत्येक समाज और देश के पास नेतृत्व सम्बन्धी विचारों का अपना संचित अनुभव होता है। आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नेतृत्व के गुणों का विस्तार से वर्णन किया गया है। आदर्श शिक्षक में उच्च नेतृत्व क्षमता का होना अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षक को अपने व्यावसायिक क्षेत्र के अन्तर्गत अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यदि शिक्षक स्वव्यवसाय सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण करने में दक्ष है तो एक कुशल शिक्षक माना जाता है, इस कुशलता हेतु उसको अनेक कौशलों में दक्ष होना अनिवार्य है। इन्हीं कौशलों में अपेक्षित नेतृत्व शैली का प्रमुख स्थान है।

नेतृत्व शैली

नेतृत्व शैली अर्थात् आवश्यकतानुसार अपने परम्परागत कार्यों एवं निर्णयों को परिवर्तित कर परिस्थिति अनुसार कार्य एवं निर्णय करना है जिससे तत्काल उस परिस्थिति में सुधार होता है तथा उसे सम्बद्ध जन

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 116 पुष्पम्

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समीक्षात्मक विश्लेषण

(शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी)

(Seminar Proceeding)

8-9 मार्च, 2018

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सदन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

डॉ. विचारी लाल मीणा

डॉ. पिंकी मलिक

डॉ. परमेश कुमार शर्मा

डॉ. आरती शर्मा

शोध-प्रकाशनविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

नवदेहली-110016

प्रकाशक:

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-93-6

मूल्यम् : ₹ 300.00

मुद्रक:

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

7. विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम में गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दे एवं चुनौतियाँ 52
–डॉ. शिवदत्त आर्य

8. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा छात्राध्यापकों की दक्षताओं का ह्रास या विकास 57
–डॉ. आरती शर्मा

9. अध्यापक शिक्षा एवं विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम 69
–डॉ. प्रदीप कुमार झा

10. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समस्याएँ एवं उनके समाधान 75
–डॉ. भारती कौशल

11. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के मुख्य घटकों का विश्लेषण 84
–डॉ. रतनसिंह

12. अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में नवाचारी अभ्यास 92
–सनत कुमार झा

13. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम की गुणवत्ता विकास हेतु उपाय 97
–यासमीन अशरफ

14. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में योगशिक्षा की आवश्यकता 110
–नवीन आर्य

English

15. Two Years Teacher Education Curriculum and Strategies for Effective Implementation - A Critical Analysis 121
–Prof. Rachna Verma Mohan

विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम में गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दे एवं चुनौतियाँ

–डॉ. शिवदत्त आर्य

सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ,
नई दिल्ली

अध्यापक को समाज एवं देश के विकास में प्रमुख कारक माना गया है। प्रत्येक सफल नागरिक के पीछे प्रतिभाशाली अध्यापकों का परिश्रम छिपा होता है। यदि अध्यापक अध्यापकीय गुणों एवं योग्यताओं से युक्त नहीं है तो इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारी वर्तमान पीढ़ी पर तो पड़ता ही है, साथ ही साथ आने वाला कल भी संशय युक्त होता है। आने वाली पीढ़ी खुशहाल हो, मूल्य युक्त जीवन जिये, स्वकार्य क्षेत्र में प्राप्त ज्ञान का उपयोग कर सके, आधुनिक जीवन एवं भारतीय परम्पराओं में सामंजस्य कर सके, रोजगार प्राप्त कर सके, माता-पिता, गुरू तथा अन्य को आदर, सम्मान एवं प्रेम दे सके, देश की एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण रख सके तथा विद्यार्थियों का सर्वाङ्गीण विकास हो सके इन महत्त्वपूर्ण कार्यों को एक योग्य अध्यापक ही उचित प्रकार से सम्पन्न कर सकता है। अध्यापक योग्य हो, व्यावसायिक कुशलता में दक्ष हो, बहुआयामी हो, विभिन्न कौशलों से युक्त हो, शिक्षण अधिगम सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण करने में दक्ष हो इन सभी दक्षताओं के साथ-साथ विभिन्न योग्यताओं का विकास अध्यापक के अन्तर्गत अध्यापक शिक्षा के माध्यम से किया जाता है। अध्यापक शिक्षा की महत्ता को देखते हुये राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने बी.एड. एवं

SNDT Women's University

National Seminar Proceeding

Development of 21st-century skills for 'Atmanirbhar Bharat' (self-reliant India)

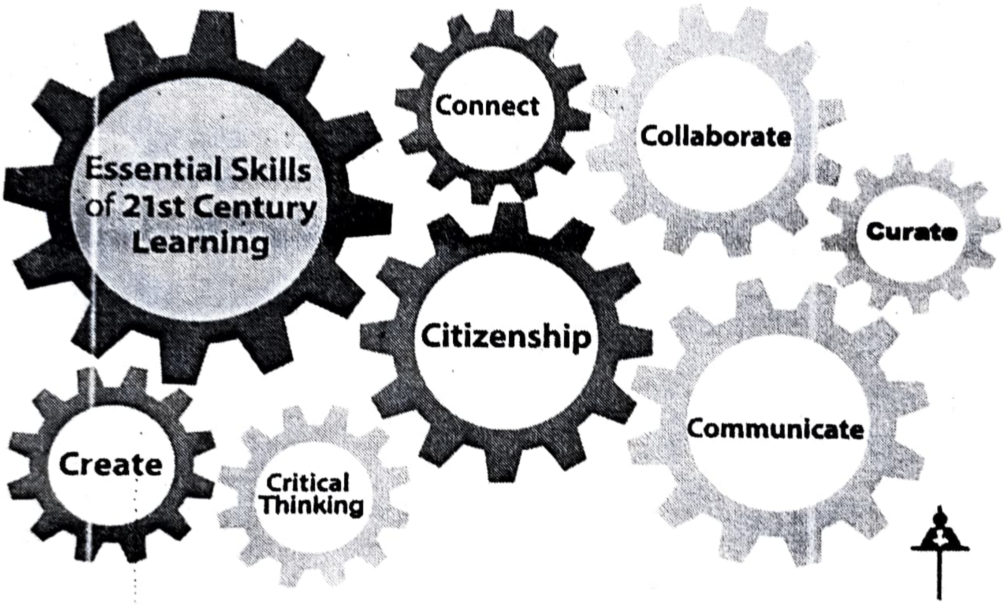

Edited by

Dr. Mahesh H. Koltame

Published by PVDT College of Education for Women, Mumbai

Year- 2022

Azadi Ka Amrit Mahotsav

Proceeding: National Seminar on Development of 21st-century skills for Atmanirbhar Bharat (Self-reliant India), 23,24 December 2022

Published in 2022 by the P.V.D.T. College of Education for Women, 1, NT Road, New Marine Lines, Churchgate, Mumbai. 400020, India,

© PVDT College of Education for Women 2022

ISBN: 978-93-5768-500-9

DOI 10.5281/zenodo.8365209

https://doi.org/10.5281/zenodo.8365209

This publication entitled **National Seminar Proceeding: "Development of 21st-century skills for 'Atmanirbhar Bharat' (self-reliant India)"** by PVDT College of Education for Women is available in open access under the CC-BY Creative Commons Attribution 4.0 International License.

The ideas and opinions expressed in this publication are those of the authors; they are not necessarily those of PVDT College of Education for Women and do not commit to the Institution.

Editor: Dr. Mahesh H. Koltame

Cover photo: PVDT College of Education for Women, SNDT Women's University, Mumbai

Graphic design: Dr. Mahesh H. Koltame

26. आत्मनिर्भर भारत निर्माण में भारतीय संस्कृति का योगदान: २१ वीं सदी कौशल विकास के सन्दर्भ में

डॉ.शिवदत्त आर्य[37]

सारांश

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृति है। यह संस्कृति सभी के कल्याण की सद्भावना के साथ ही आत्म कल्याण, आत्मोन्नति, आत्मज्ञान स्वजागरण एवं आत्मनिर्भरता हेतु दिशा प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति एक सुदीर्घ संस्कार परंपरा का नाम है। भारतीय संस्कृति मानव समुदाय की आत्मा है। भारतीय संस्कृति के नाम से हम जिस संस्कृति का स्मरण करते हैं, उस संस्कृति का परिचय वेद, उपवेद, वेदांग, दार्शनिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और धार्मिक साहित्य की अनेक विधाओं का परिशीलन करने से प्राप्त हो सकता है।

भारतीय संस्कृत साहित्य यथा वेद, उपनिषद्, पुराण, वाल्मीकिरामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवत्गीता में आत्मनिर्भर हेतु अनेक अनुकरणीय उदाहरण दिए गए है, जिनका अनुकरण मानव वर्तमान में कर सकता है| श्रीमद्भगवत्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वनिर्माण हेतु उपदेश दिया है-

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥ (अध्याय-6 श्लोक 5)

अर्थात् व्यक्ति अपना स्वयं ही मित्र है स्वयं ही शत्रु है, वह अपना विकास एवं नाश स्वयं ही करता है, अतः मानव को स्व जागरण हेतु दृढ संकल्प लेते हुए सार्थक कार्यों में निरंतर संलग्न रहना चाहिए|

२१ वीं सदी में विविध क्षेत्रों में कौशल विकास के माध्यम से एक ऐसे सशक्त आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हो रहा है जो कि पूरे विश्व को एक समुचित दिशा प्रदान कर सकता है। विश्व समुदाय के लिए इस महत्वपूर्ण कार्य सम्पादन हेतु भारत को विविध कौशलों तथा वर्तमान की शिक्षा तकनीकों से समृद्ध होना होगा तथा मार्ग में आने वाले विविध कठिनाइयों को भी दृष्टिगत रखना होगा। विविध समस्याओं के समाधान हेतु भारतीय संस्कृति में निहित उदात्त तत्वों का अनुसरण करना होगा।इसी संदर्भ में इस पत्र में चर्चा की जाएगी।

Keywords: भारतीय संस्कृति, आत्मनिर्भर भारत, कौशल विकास, NEP 2020

भूमिका

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति एक सुदीर्घ संस्कार परंपरा का नाम है।भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृति है। यह संस्कृति सभी के कल्याण की सद्भावना के साथ ही आत्म कल्याण, आत्मोन्नति, आत्मज्ञान एवं आत्म निर्भरता हेतु दिशा प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति

[37] सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री ला.ब.शा.रा.संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

व्याकरणशिक्षणम्

(Sanskrit Grammar Teaching)

डॉ. परमेशकुमारशर्मा
डॉ. शिवदत्त–आर्य:
डॉ. प्रज्ञा

व्याकरणशिक्षणम्

लेखकौ

डॉ. परमेशकुमारशर्मा, डॉ. शिवदत्त-आर्यः
सहायकाचार्यौ, शिक्षापीठम्,
श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली

Email - parmesh.kumarsharma87@gmail.com
arya.shiv1@gmail.com
Mob.- 8385945895, 9454323060

सर्वाधिकारः - © लेखकाधीनः

ISBN : 978-93-93671-35-6

संस्करणम् - प्रथमम्

प्रकाशनवर्षम् - 2024

आकल्पनम् - श्री आकाशः

मूल्यम् - 200/-

प्रकाशकः:- अमर ग्रन्थ पब्लिकेशन्स
8/25 विजयनगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 8802451208

मुद्रकः:- अमर प्रिंटिंग प्रैस
दिल्ली-110009

विषयानुक्रमणिका

विषयाः		पृ.सं.
प्राक्कथनम्		iv - v
प्रथमोऽध्यायः	व्याकरणशास्त्रस्य इतिहासः	01- 09
द्वितीयोऽध्यायः	व्याकरणशास्त्रस्य शिक्षणस्वरूपम्	10-15
तृतीयोऽध्यायः	व्याकरणशास्त्रस्य भाषावैज्ञानिकं महत्त्वम्	16-18
चतुर्थोऽध्यायः	पाणिनीयव्याकरणस्य वैज्ञानिकता	19 -22
पञ्चमोऽध्यायः	रचनात्मकविधिः	23-31
षष्ठोऽध्यायः	रूपान्तरणविधिः	32-37
सप्तमोऽध्यायः	जननात्मकविधिः	38-40
अष्टमोऽध्यायः	उच्चारणशिक्षणम्	41-46
नवमोऽध्यायः	कण्ठस्थीकरणम्	47-51
दशमोऽध्यायः	व्याकरणस्य प्राचीनार्वाचीनविधयः	52-59
एकादशोऽध्यायः	परम्परागतविधिः पाठशालाविधिः वा	60-65
द्वादशोऽध्यायः	आगमनविधिः	66-72
त्रयोदशोऽध्यायः	निगमनविधिः	73-75
चतुर्दशोऽध्यायः	ह्यूरिष्टिकविधिः	76-79
पञ्चदशोऽध्यायः	प्रायोजनाविधिः	80-84
षोडशोध्यायः	समस्याविधिः	85-87
सप्तदशोऽध्यायः	व्याकरणशिक्षणं दृश्यश्रव्योपकरणानि च	88-91
अष्टादशोऽध्यायः	प्रायोगिकव्याकरणम्	92-95
नवदशोऽध्यायः	संस्कृतभाषाप्रयोगशालायाः प्रयोगः	96-101
विंशतितमोऽध्यायः	व्याकरणपाठयोजना	102-109
एकविंशतितमोऽध्यायः	व्याकरणशास्त्रशिक्षणाय कौशलविकासः	110-114
द्वाविंशतितमोऽध्यायः	व्याकरणशिक्षणे सङ्गणकस्य अनुप्रयोगः	115-118
त्रयोविंशतितमोऽध्यायः	व्याकरणसम्बद्धपरिष्कारदृष्टिः	119-122
चतुर्विंशतितमोऽध्यायः	पाठयोजना	123-125
सन्दर्भग्रन्थसूची		126